अक्षर प्रभात मासिक पत्रिका फरवरी-2025

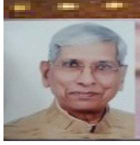

स्वास्थ्य–सामाजिक–आध्यात्मिक एवं नव्यमानवता के साथ जीवन मूल्यों पर आधारित मातृभूमि को समर्पित मासिक पत्रिका।

✧ प्रेरणा स्त्रोत ✧
स्व. श्री राम गोपाल बंसल

✧ अध्यक्ष ✧
श्री अविनाश बंसल
अध्यक्ष–अक्षर प्रभात ट्रस्ट(रजि.)भोपाल

✧ उपाध्यक्ष ✧
श्री नितिन बंसल

✧ वित्तीय सलाहकार ✧
श्री अमित बंसल

✧ कोषाध्यक्ष ✧
श्रीमती दिब्या बंसल

✧ सलाहकार ✧
श्री अभिषेक बंसल
श्रीमती स्मिता बंसल
श्री चिरंजीव अग्रवाल
श्रीमती पूजा अग्रवाल

✧ कार्यकारिणी संपादक ✧
श्रीमती पूजा धिमान
श्रीमती मोगरा भास्कर

✧ विपणन, प्रचार–प्रसार ✧
श्री अविनाश बंसल
प्रधान सम्पादकीय कार्यालय
अक्षर प्रभात,22–ए. इन्द्रपुरी
भोपाल(म.प्र)
फोन:0755–3146433
www.aksharprabhat.Org

वसुधैव–कुटुम्बकम
सर्वजन हिताय–सर्वजन सुखाय।

अनुक्रमणिका

- कुंभ की उत्पत्ति
- बुढ़ापे की लाठी
- खाली हाथ कैसे लौटा दें(कहानी)
- बाबा नाम केवलम्
- सफल जीवन का मार्ग कर्म हैं उन्नतिमार्ग ज्ञान हैं।
- हम समाज में कैसे रहें?
- बेहतर जीवन के लिये नियम
- **Motivation**
- भारत राष्ट्र की महिमा क्यों?
- भारतीय नारी परिवार की धरोहर
- साहस
- गौरवशाली सनातन दार्शनिक परम्परा
- अक्षर
- नमस्कार के लाभ
- समय
- परिवर्तन
- माँ की महिमा
- परीक्षा
- क्रोध पर विजय पायें
- बच्चों में संभावनाओं को पहचानना जरूरी हैं।

कुंभ की उत्पत्ति

पौराणिक मान्यता हैं कि जब समुद्र मंथन हुआ तो उसमें से अमृत का कलश निकला। देवताओं और राक्षसों के बीच इसे पाने के लिए 12 दिन तक युद्ध हुआ। इस दौरान, अमृत की कुछ बूंदें धरती पर चार जगहों पर गिरी–प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इन्हीं जगहों पर कुंभ मेले का आयोजन होता हैं।

कुंभ मेला विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृति और धार्मिक मेला हैं। इस दौरान संपूर्ण भारत के लोग एक जगह एकत्रित होकर नदी में स्नान करते हैं, संतो के प्रवचन सुनते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के साथ ही अपने जीवन को सुंदर बनाते हैं। इस दिन का संबंध समुद्र मंथन से भी जोड़ा जाता हैं,जब देवताओं और दानवों ने अमृत के लिए युद्ध किया, कहा जाता है कि उस अमृत की कुछ बूंदें इस स्थान पर गिरी थी, जिसमें स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

हर 12 साल में पूर्ण कुंभ लगता हैं। यह इसलिए होता हैं क्योंकि हिंदू मान्यता के अनुसार देवताओं के 12 दिन मनुष्यों के 12 साल के बराबर होते हैं। महाकुंभ मेला, हिंदू धर्म का सबसे बड़ा और पवित्र धार्मिक आयोजन हैं, महाकुंभ मेले की कुछ खासियतें–

- यह दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समारोह हैं,
- यह पवित्र स्नान की श्रृंखला पर केंद्रित हैं,
- इसमें अमृत स्नान, मंदिर दर्शन, दान–पुण्य और अन्य धार्मिक अनुष्ठान होते हैं।
- मेला न केवल मनोरंजन के साधन हैं, अपितु ज्ञानवर्द्धक के साधन भी कहे जाते हैं। प्रत्येक मेले का इस देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं से जुड़ा होना इस बात का प्रमाण हैं कि ये मेले किस प्रकार जन मानस में एक अपूर्व उल्लास तथा मनोरंजन करते हैं।

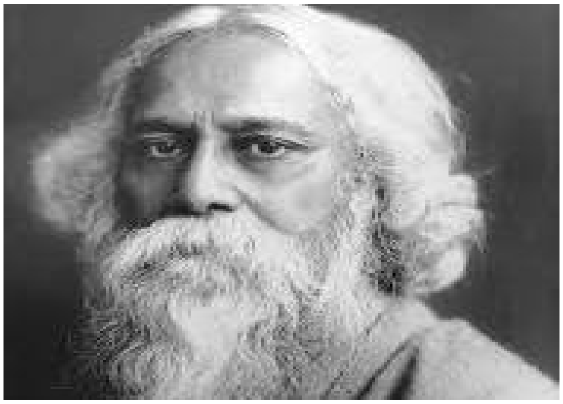

बुढ़ापे की लाठी

बुढ़ापा एक ऐसा रोग हैं जो हर किसी को लगता हैं, राजा हो या रंक नवाब हो या फकीर ,अफसर हो या मातहत, किसान हो या मजदूर स्त्री हो या पुरूष इस रोग से सभी ग्रसित होते है, तो क्या इस असाध्य रोग का इलाज हैं? सर्वेक्षण करने पर कई मत सामने आये हैं, उनमें से एक मत तो यह है कि हमने अपनी पूरी जवानी बच्चों के पालने–पोसने में लगायी तो अब बच्चे हमारी देखभाल करें, यह उनकी नैतिक जिम्मेदारी है, जब हम इस रोग से ग्रसित हों तो वे हमारी दवा आदि का इंतजाम करें, इसके साथ–साथ हमारे बुढापे की लाठी बने ऐसे में एक ही रास्ता बच जाता हैं और वह हैं आपकी या सूझ–बूझ ही आपके बुढ़ापे की लाठी बन कर आपको सहारा दे सकती हैं, सच से कभी मुख न मोड़े सूरज की तरफ पीठ कर लेने से रात नहीं हो जाती हैं, यह सोचना कि बुढ़ापा मुझे कभी नहीं आयेगा, कदापि सच नहीं हो सकता, आज जिस तेजी से खून आपकी रग–रग में दौड़ रहा हैं वह तेजी सभी दिन नहीं रहेगी, शरीर थकेगा ही, अतः इस खुशफहमी में न रहें कि बुढ़ापा नहीं आयेगा वर्ना बहुत बड़ा धोखा खायेंगे आप वह भी किसी और से नहीं बल्कि अपने–आपसे, अतः इस कटु और शाश्वत जो अपनी संतान से अपेक्षा रखते हैं, यदि आप ऐसा न करें तो आप ज्यादा सुखी रहेगे, आपके माता–पिता ने आपका लालन–पालन किया और आपने अपनी संतान का, हिसाब–किताब बराबर हो गया, जब आप अपने माता–पिता के बुढ़ापे की लाठी का सहारा न बने तो फिर आप अपनी संतान से लाठी बनने की क्यों अपेक्षा रखते हैं? जब आपके माता–पिता गांव में पड़े–पड़े किसी रोग से संघर्ष कर रहे थे तो आप शहर में अपने बच्चों के लालन–पालन एवं अपनी नौकरी में व्यस्त थे तथा बहाना बना रहे थे कि

माता–पिता को अपने खेत–खलिहान से लगाव हैं, वे शहर में आना ही नहीं चाहते, अब आप ही सोचिए कि आप अपनी संतान से कैसे आशा करते हैं कि वह आपको अपने साथ रखेगे, इस स्वप्न को छोड़ कर वास्तविकता के धरातल पर जीवन–यापन कीजिये और अपनी सूझ–बूझ से अपने बुढ़ापे की व्यवस्था कर चैन की वंशी बजाइयें।

खाली हाथ कैसे लौटा दें

एक बार महाराजा रणजीतसिंह कही जा रहे थे कि समाने से एक ईंट आकर उन्हें लगी। सिपाहियो ने चारों ओर नजर दौड़ाई तो एक बुढ़िया नजर आई। उसे गिरफ्तार कर के महाराज के सामने हाजिर किया गया। बुढ़िया महाराज को देखते ही डर के मारे कांप उठी। बोली, सरकार। मेरा बच्चा कल से भूखा था, घर में खाने को कुछ न था, पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर तोड़कर उसे खिलाऊँ, किंतु वह पत्थर भूल से आप को आ लगा। मैं बेगुनाह हूँ महाराज। सरकार मुझे क्षमा किया जाय। महाराज ने कुछ देर सोचा और कहा– वृद्धा को एक हजार रूपया देकर ससम्मान् छोड़ दिया जाय। यह सुनकर सारे कर्मचारी अचम्भित रह गये। आखिर एक ने पूछ ही लिया – महाराज । जिसे दण्ड मिलना चाहिये उसे रूपये दिये जायेगें ?

रणजीत सिंह बाले– ''यदि निर्जीव वृक्ष पत्थर लगने पर मीठा फल देता हैं तो महाराजा उसे खली हाथ कैसे लौटा दें'' महाराज रणजीत सिंह उन्नीसवी सदी में ही थे और भारत भूमि अपने ऐसे पुत्रों से भी भरी हुई थी यह तो बीसवीं सदी के मध्य (आजादी के बाद) से ही हम भोगी होते जा रहे हैं और मानवीय मूल्यों की अवहेलना ही नहीं उन पर चलने वालों को प्रताड़ित करते रहें है। काश हम अपने जीवन मूल्यों को अब भी पहिचाने यही है भारतीय संस्कृति ?

बाबा नाम केवलम्

संम्पूर्ण विश्व के लिये–दुख रहित–पाप रहित सिद्ध मंत्र।

बाबा

ब – बाधाये दूर करने वाला

अ – आत्म मोक्षार्थ–जगत हितायच, आत्मअवलोकन

ब – बोधिसत्व, वाचालता से परे, व्यापक

अ – आध्यात्मिक दर्शन मुक्त उपासना पद्धति

– आदर्श आचरण

– असावधानी व अनजाने में अज्ञानता वश कोई अशुद्धि होने पर उसे तुरन्त शुद्ध कर लेना और दण्ड़ स्वीकार करना–

– अनबूझ पहेलियों का निराकरण

नाम

नाम जाप अपने–अपने ईष्ट (सदगुरू) का

केवलम्

क – कर्तव्यनिष्ठ – कृष्णमय

ए – एकनिष्ठ – एकलक्ष्य

व – विचारो से ओतप्रोत–उम्र

ल – लयमय जीवन, लालच रहित

म – मैं पन से निवृति, महानिषेध, माया से दूर

सफल जीवन का मार्ग कर्म है उत्रतिमार्ग ज्ञान है।

कर्म से वातावरण मिलता हैं

ज्ञान से संसार बनते हैं

इसलिये दोनो का अनुसरण करना ही जीवन की सार्थकरता हैं यही जीवन हैं।

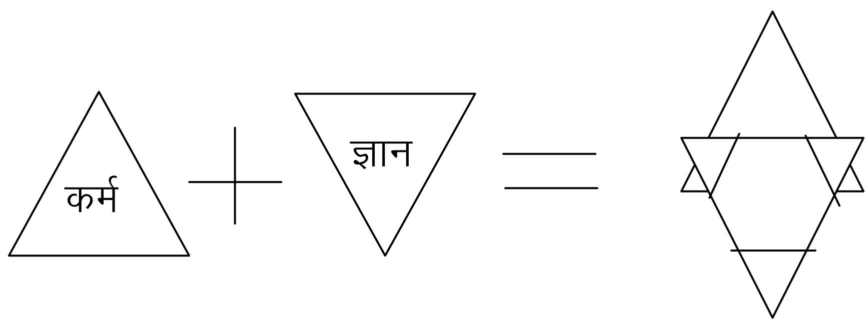

किसी भी ऊँचे स्थान पर टेढी–मेढी सीढी के बिना नही जा सकते,

संसार (विश्व) मैं ऐसा कोई भी नही हैं जो नीति का जानकार न हो परन्तु उसके प्रयोग से लोग (मनुष्य) विहीन होते हैं।

जीवन में न्याय और धर्म के पथ पर आगे–बढो–आगे बढ़ते ही जाओ अपने चरम की ओर–

लक्ष्य की ओर... परमपिता की ओर।

इस जगत में कोई तुच्छ नही है.... गुरूत्वहीन नही है।

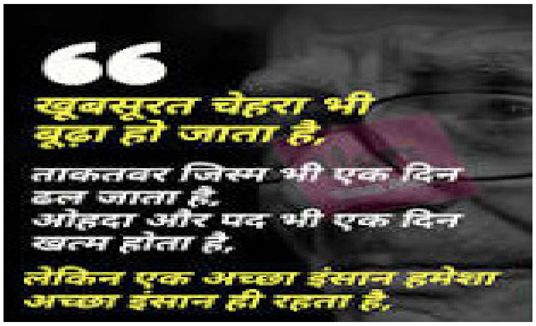

हम समाज में कैसे रहें ?

आर्दश समाज की व्यवस्था प्रत्येक सदस्यों के पारस्परिक सहयोग तथा सामवायिक आचरण पर निर्भर करती है। और यह सामवायिक आचरण यम नियम की साधना पर निर्भर करता है। इसलिये साधना ही आर्दश समाज की शुभमिति है। विशेष कर यम नियम की साधना।

हमेशा देखा जाता है कि कोई व्यक्ति यम नियम विरोधी आचरण के फलस्वरूप विशेषकर बिना हिसाब किताब के खर्च के कारण ऋणगस्त हो जाता है तथा इसके परिणाम स्वरूप समाज के निकट जाकर कहता है। मुझे बचाओं इस दिशा में व्यक्ति मिलित प्रचेष्टा के क्षण बचाना समाज का कर्तव्य है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति के आचरण के ऊपर यम नियम की साधना के ऊपर तथा व्यय के ऊपर समाज का अधिकार होना चाहिये। खर्च करने के समय किसी का मत नहीं लेना और ऋणगस्त होने पर सबों की सहायता लेने का मनोभाव ठीक नही है।

बेहतर जीवन के लिये नियम

1.घृणा कभी नहीं 2.चिंता कम करो 3.साधारण जीवन जिओं

4.थोडी उम्मीद करें 5.बहुत कुछ दे दों 6.हमेशा मुस्कुराते रहो

7.प्यार से जियो

Motivation

प्रत्येक सदस्यों को सुबह और शाम नियमित रूप से साधना करनी चाहिये। इससे अपने अन्दर की **Will power** बढ़ती है। साधना से हम उद्देश्यों को साध सकते हैं। यह किसी भी क्षेत्र के लक्ष्य भेदन के लिये उपयोगी तत्व है।

भारत राष्ट्र की महिमा क्यों ?

भारत राष्ट्र विश्व में एक ऐसा देश है जिसमें विश्व में जितने भी मजहब हमारे देश में हैं उतने किसी भी देश में नहीं हैं भारत को एक राष्ट्र के बारे में प्रत्येक भारतीय को सोचना होगा।

मुसलमान – भारत से पाकिस्तान एवं बंगलादेश चले गये हैं।

ईसाई – विलासिता एवं मूल्य विहीन सनातन संस्कृति दे गये तथा बदले में समृद्धि एवं खुशहाली लूट ले गये।

वामसेफ – ब्राह्मण एवं राजपूत विहीन भारत की कल्पना कर रहे हैं।

मानव जाति किस दिशा में जा रही है। मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। जाति, बिरादरी एवं संम्प्रदाय के चिन्तन में कब तक सोये रहेंगे।

हमें अखण्ड विश्व का निर्माण करना है। मनुष्य के शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का जागरण करना है।

आतंकवाद को पराजित करने के लिये दिव्य साहस की आवश्यकता है। उसी का प्रतीक भगवान हैं जो आदिकालीन तथ्य–सत्य का प्रतीक चला आ रहा है :–

– हरा रंग विकास एवं खुशहाली का है।

– श्वेत शान्ति एवं सादगी का प्रतीक है।

– भगवान, तप, त्याग और सभी को आत्मसात कर लेता है।

अतः किसी रंग विशेष को आतंकवाद की संज्ञा देना राष्ट्रध्वज का अपमान है। हम समस्त भारतीयों को इस तरह की सोच को तिलांजलि देना होगा और राष्ट्रवाद की ओर सोचना होगा।

भारत ही विश्व में शान्ति, प्रेम, सौहार्द्र ला सकता है इसलिये इसकी जिम्मेदारी बनती है। अतः हमें विश्वशान्ति एवं खुशहाली का साम्राज्य लाना ही होगा। हमारी सोच को नव्यमानवतावादी में ढालना होगा।

भारतीय नारी

परिवार की धरोहर

हिन्दुत्व में महिलाओं की देखभाल इसलिये नहीं की जाती कि उन्हें निःकृष्ट या असमर्थ बनाकर रखा है, बल्कि उनका ध्यान इसलिये रखा जाता है कि वे अपने घर के लिये धरोहर होती है। वे समाज की शक्ति एवं गौरव का आधार है। जिस प्रकार बहुमूल्य आभूषण को असुरक्षित नहीं छोड़ा जाना चाहिये उसी प्रकार महिलाओं को भी असुरक्षित नहीं छोड़ा जाना चाहिये। क्योंकि महिलायें कई सामाजिक दायित्वों का वहन करती हैं जैसे बच्चों को जन्म देना, उनकी देखभाल करना, संस्कार देना घरेलू एवं धार्मिक कार्य करना आदि। उन्हें बच्चों को सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदान करने का काम भी करना पड़ता है क्योंकि वह जन्म से संस्कारित होती हैं, इसीलिये उन्हें कमाई करने का अतिरिक्त भार नहीं दिया जाना चाहिये। महिलाएं परिवार की धुरी होती हैं इन्हें प्रकृति से स्वयमेव हुनर मिला है इनसे परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है।

* माता का हृदय दया का आधार है उसे जलाओं तो भी उसमें दया की ही सुगंध निकलती है, पीसो तो भी दया का रत्न निकलता है, माता देवी है, विपत्ति की क्रूर लीलायें भी स्वच्छ निर्मल स्त्रोत को मलिन नहीं कर सकती।

* विवाह की स्थिरता तीन खम्बों पर स्थिर है– 1. आपसी विश्वास 2. परस्पर सम्मान 3. सहानुभूति पूर्ण आपसी समझ। इन तीनों में विश्वास एवं निष्ठा वैवाहिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।
* जिस परिवार में पति और पत्नी में आपसी प्रेम–आकर्षण और सम्मान रहता है, उसमें निश्चित रूप से सदैव सुख और शान्ति रहती है।

साहस

1. साहस ऐसा शस्त्र है जिसे, राखों अपने पास।।
   धीरज खोबे जब कभी, निकली समझो सांस।।
2. अंकुश ऐसी चीज है, गल हो जाय निढाल।।
   चाबुक ताकत देखकर, शेरऊ बदले चाल।।
3. साहस इतना सूर्य में, अन्धकार मिट जाये।।
   देख ज्योती चाँद की, तारागण मुरझाया।।
4. गोविन्द गुरू ललकार ने, सब को दिया पछाड़।।
   जग छोड ऐसे भगे, कहुँ मिली नहि आड़।।
5. छत्रपति ललकार कर दुश्मन को मार भगाय ।।
   सभी जिये सम्मान से, रस्ता दिया बताय।।
6. साहस करके पार्थ ने, बना लिया पहचान।।
   कौरव दल को ढेर करि, बढा लिया निज मान।।
7. फिर से यदि मौका दिया, धोखा देगें भाय।।
   हिम्मत फिर से तुम करों, बदला लेऊ चुकाय।।
8. चींटी साहस देखकर, गज नीचे गिर जाय।।
   साहस ऐसी चीज है, नहीं समझ कोई पाय।।

9. पृथ्वीराज की वीरता, मुख से कही न जाय।।
धोखा देकर शत्रु ने, रण में दियो पछाड़।।

10. राम कृष्ण की भूमि पर, वीरों की भरमार।।
हम सब वीर सपूत है, नहि मानेंगे हार।।

गौरवशाली सनातन दार्शनिक परम्परा

अनादि काल से सनातन धर्म मनीषियों ने मानवता के सर्वोत्तम विकास के लिए चिन्तन करना आरम्भ कर दिया था। कला, साहित्य, धर्म–साहित्य और आर्थिक उन्नति पर दृष्टि दौड़ायी थी। प्रत्येक क्षेत्र को हमारे साधकों ने सँवारा एवं संस्कारित किया। तभी से हमारी संस्कृति का सूत्रपात हुआ। वस्तुतः वैदिक संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है तथा उतनी ही प्राचीन है हमारी मंगलमय दार्शनिक परम्परा। सनातन संस्कृति की भाँति ही वैदिक–दर्शन के अनेक शाश्वत तत्त्व हैं। उनमें कुछ प्रमुख तत्त्वों में जो विशेष दृष्टि है, वह है अनेकता में एकता का दर्शन अर्थात् भेद में अभेद की स्थापना। इसे ही वेदान्त में अद्वैत–दर्शन की संज्ञा प्रदान करते हुए विस्तार से विवेचन किया गया।

सनातन वैदिक–दर्शन की व्यापकता – सनातन दर्शन की दृष्टि व्यापक है। यद्यपि वैदिक दर्शन की अनेक शाखाएँ हैं तथा उनमें मतभेद भी हैं। फिर भी वे एक दूसरे की उपेक्षा नहीं करती वे नित्य जब दर्शन को जन्म देती हैं सभी शाखाएँ एक दूसरे के विचारों को समझने का प्रयत्न करती है। वे विचारों की युक्तिपूर्वक

समीक्षा करती हैं और तभी किसी सिद्धान्त पर पहुँचती हैं। इसी उदार मनोवृत्ति का फल है कि वैदिक–दर्शन में विचार–विमर्श के लिए एक विशेष प्रणाली की उत्पत्ति हुई। इस प्रणाली के अनुसार पहले पूर्व पक्ष होता है, तब खण्डन होता है तथा अन्त में उत्तर पक्ष आता है जिससे दार्शनिक अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है।

इसी उदार दृष्टि के कारण वैदिक दर्शन की प्रायः प्रत्येक शाखा अत्यन्त समृद्ध है। उदाहरण के लिए हम वेदान्त में चार्वाक्, जैन, बौद्ध, सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक आदि सभी मतों पर विचार किया गया है। यह रीति केवल वेदान्त में ही नहीं किन्तु अन्य दर्शनों में भी पायी जाती है। वस्तुतः वेदान्त का प्रत्येक दर्शन ज्ञान का एक–एक भण्डार है। वेदान्त दर्शन की उदार दृष्टि ही उसकी प्राचीन समृद्धि तथा उन्नति का कारण है। वेदान्त दर्शन की महत्ता है कि अन्य दर्शन भी इसमें रहकर फल फूल रहे हैं चैतन्य है।

ASHAR अक्षर

अमंत्रमक्षर नास्ति–नास्ति मूलमनौसघम्।

अयोगः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

ऐसा कोई अक्षर नहीं है जो मंत्र नही है ऐसी कोई वनस्पति नही है जो औषधि न हो, ऐसा कोई पुरुष नहीं है जो योग्य न हो प्रत्येक शब्द में मंत्र विधमान है उसको जागृत करने की योग्यता होनी चाहिये। दृढ़ संकल्पित व्यक्ति हर वस्तु व परिस्थिति में अपने लक्ष्य प्राप्ति का साधन ढूढ लेता है। दृढ़ संकल्प के द्वारा ही व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

नमस्कार के लाभ

नमस्कार का मुख्य उद्देश्य हैं– जिन्हें हम नमन करते हैं, उनसे हमें आध्यात्मिक व व्यावहारिक लाभ हो सरोकार हो।

1.व्यावहारिक लाभ देवता अथवा संतो के नमन से उनके गुण व कर्त्तव्य का आदर्श हमारे समक्ष सहज उभर जाता हैं। उसका अनुसरण करते हुये हम स्वयं को सुधारने एवं जीवन सफल बनाने का प्रयास करते हैं।

2.आध्यात्मिक लाभ–नम्रता बढ़ने लगती हैं व अहम कम होता हैं–आप श्रेष्ठ हैं और मैं तुच्छ या कम। मुझे किसी का भी ज्ञान नहीं, आप सर्वज्ञ हैं।

सात्विकता मिलती हैं व आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र मिलती हैं। नमस्कार की मुद्रा से हमें सात्विकता अधिक मात्रा में मिलती हैं। मुद्रा पूर्ण एवं शुद्ध हो। परमपुरूषों और संतों को नमन करने से हमें उनसे आशीर्वाद एवं शुभ संदेश भी मिलते हैं, जिससे हमारी आध्यात्मिक आन्तरिक उन्नती शीघ्र होती हैं।

समय

करहिं सदा हम सब की भलाई, करि देखऊ अब हमसे मिताई।।

लेन देन सब देहु भुलाई, मानऊ मन से समय को भाई।।

काम किया हमने सब तुम्हारे, फिरऊ न माने न तुम सुधर ।।

समझावहिं तुमको भरि बारी, करऊ संग संतन हितकारी।।

छोड कुसंग करऊ संतसंगा, जाय नही पावनि गंगा।।

मात पिता सेवा तुम करहु, दीन दुःखी के दर्द को हरऊ।।

समय गुरू सबसे बलवान, समय को मानो बृम्हा समाना।।

समय देख साधऊ सब कामा, बिना समय कछु बने न कामा।।

समय समय ही है। बलिहारी, समय सुधा सम पावकारी।।

सदा समय की सुनो पुकारा बिना समय नहि होय उबारा।।

समय मात पितु कुल परिवारा, समय ही चोल दुश्मन द्वारा।।

कह हुं की लगि समय बड़ाई, समय के बस बंध गये रघुराई।।

समय को पुजहु सब मिलमाई, बिना समय पहि होय भलाई।।

समय की महिमा बड़ी ही न्यारी, समयचक्र में बंधें मुरारी।।

समय को मानऊ भगवत रूप, पहि तो जाय गिरऊ भवकूपा।।

दोहा : समय समय की बात, समय बहुत बलवान।।

मिसरी लगे जहर सम, पलट देत सब ज्ञान।।

परिवर्तन

1. तब अब के बीच, फैसला बहुत बढ़ गया।।
कहने को बात छोटी, पर रंग अलग चढ़ गया।।

2. करते है बहुत वादे, कर कुछ नहीं पाते ।।
करते है काम अपना, बाकी भूल जाते।।

3. मांगे मदद् कोई, फटकार उसको मारते।।
पहन चोली नकली, भरोसा है दिलाते।।

4. सम्मान मिले हमको, रहते है सबसे आगे।।
काम कभी आवे तो, मैदान छोड़ भागे।।

5. रिश्ते नातें को भुला, अपनी ही चाहत रह गई।।
किस तरह मालामाल हों, फिकर यही रह गई

6. कहन को जन सेवा के, नारे है लगाते।।
तन सेवा पेट भक्ति के, दायरे में रह जाते।।

7. वह सब धन्य हैं, जिनने है सब बनाया।।
बदौलत आज उनकी ही भारत स्वर्ग बन पाया।।

8. कुछ करो लिहाज अब, समय की पुकार है।।
पद चिन्हो पर चले उनके, ऊपर यही उपकार है।

9. करने को बहुत पर, बात उधारी रह गई।।
मतलब निकल गया तो, इक कहानी रह गई।।

माँ की महिमा

माँ संवेदना हैं भावना हैं अहसास हैं,

माँ जीवन के फूलों में, खुशबु का वास हैं,

माँ रोते हुये बच्चों का खुशनुमा पल हैं,

माँ मरूस्थल में नदी का मीठा सा झरना हैं।

माँ लोरी हैं,गीत है,प्यारी सी शाम हैं

माँ पूजा की थाली हैं मंत्रों का जाप हैं,

माँ आंखों का सिसकता हुआ किनारा हैं,

माँ गालों पर पप्पी हैं, ममता की धारा हैं,

माँ झुलसते दिनों में कोयल की बोली हैं।

माँ मेहन्दी हैं, कुमकुम हैं, सिंदूर हैं रोली हैं,

माँ त्याग हैं, तपस्या हैं, सेवा हैं, माँ फूंक से ठंडा किया कलेवा हैं।

माँ पृथ्वी हैं, जगत हैं, धुरी हैं, माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी हैं

माँ जीवन की कड़वाहट में अमृत का प्याला हैं।

माँ जैसा दुनियाँ में कुछ हो नहीं सकता।

परीक्षा

- सुन्दरता की परीक्षा प्रकाश में होती हैं।
- धर्म की परीक्षा चरित्र से होती हैं।
- सज्जन की परीक्षा व्यवहार से होती हैं।
- वीरता की परीक्षा संकट के समय होती हैं।
- बुद्धि की परीक्षा कठिनाई के समय होती हैं।
- आपातकाल में धैर्य, धर्म, मित्र और नारी की परीक्षा होती हैं।

क्रोध पर विजय पायें

- एक ग्लास ठंडा पानी पीयें
- मौन रहे
- उस स्थान से कुछ समय के लिये हट जाये, थोड़ा दूर चले जाये।

- एक से दस तक गिनती बोले। अपने किसी प्रियजन या ईष्ट के पास बैठ स्नेहपूर्ण बातें करें।

- क्रोध के समय चुपचाप अपने कमरे में जायें।

- क्रोध अनेक बीमारियों की जड़ हैं।

- क्रोध एवं तनाव से मुक्ति हेतु मन को हल्का रखें।

- अपने बोल फूलों से कोमल,शहद से मीठे व रत्नों से अनमोल रखें।

बच्चों में संभावनाओं को पहचानना जरूरी हैं

आखिरकार सरकार को इंसान की सबसे अमूल्य धरोहर संभालने की सुध आ गई। पिछले हफ्ते नीति आयोग में अटल इनोवेशन मिशन की स्थापना की गई। इस योजना के तहत देश भर से 500 स्कूलो में अटल टिंकरिंग लैब बनाई जाएगी जहां बैठकर बच्चे नए आइडिया सोचेंगे और उन्हें साकार करेंगे। चुने गए हर स्कूल

के लिए 20 लाख रूपए की अनुदान राशि का प्रावधान भी किया गया हैं। इस योजना के तहत भविष्य में दस लाख युवा इनोवेटर पैदा करने का लक्ष्य भी हैं। यह एक अच्छी पहल हैं।

हमारी शिक्षा प्रणाली वर्तमान और भविष्य की दुनिया के साथ कहीं पर भी कदम और ताल मिलाकर चलती नजर नहीं आती। सिलेबस और उभरते ट्रेंड के बीच खाई बढ़ती जा रही हैं, बल्कि वक्त जरूरत बन चुके हैं। इसकी मदद से ही भविष्य की संभावनाओं के द्वार खुल सकते हैं। विषयों के साथ–साथ, विद्यार्थियों की स्वतंत्र और मौलिक सोच को विकसित किया जाना चाहिए। हम क्रिएटिविटी को प्रायः टैंलेंट मानते हैं। अध्ययन सिद्ध कर चुके हैं कि यह जन्मजात गुण हैं और इसे निखारा व तराशा जा सकता हैं। मौलिक प्रतिभा का बाहर आना ही इनोवेशन हैं। लेकिन इनोवेटिव सोच को पैदा होने और खिलने के लिए एक माहौल की जरूरत होती हैं।

हर एक बच्चा अनूठा होता हैं। संभावनाओं से भरा होता हैं। लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली में कक्षाओं के टॉपर्स को छोड़कर सभी को यह अहसास दिलाया जाता हैं कि वे औसत दर्जे के विद्यार्थी हैं। अगर हम देश के करोड़ों विद्यार्थियों को, जो इन स्कूलों में भविष्य के स्वप्न बुन रहे हैं, यह अहसास करवा दें कि वे सामान्य हैं तो उनके रचनाशीलता का बीज सूख जाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी एक संसाधन हैं। इसे जागृत करने के लिए किसी धन की जरूरत नहीं पड़ती। उल्टे यदि कोई छात्र अपनी इंनोवेटिव क्षमता को जगा लेता है तो वह एक मूल्यवान संसाधन बन जाता हैं। आज के युग में आइडिया ही करंसी हैं।

Union Budget 2025-26: Income Tax Proposals and Their Impact on the Common Taxpayer

By CA. Amit Bansal

The Union Budget 2025-26 has introduced significant changes in the income tax regime, offering substantial relief to resident individuals while streamlining tax compliance procedures. These proposals aim to simplify tax calculations, reduce the tax burden on middle-income earners, and enhance transparency in tax administration. One of the most notable changes is the revision in tax slabs, ensuring greater savings for individuals with annual incomes up to □12 lakh. Additionally, the period for filing updated returns has been extended to four years, providing taxpayers with more flexibility in correcting past omissions.

Tax Slabs and Relief for Individuals

A major highlight of this budget is the revision of tax rates, which provides significant benefits to resident individuals. Under the new regime, taxpayers earning up to □12 lakh per annum can enjoy full rebate benefits, effectively reducing their tax liability to zero. For higher income groups, the new slab rates introduce lower tax burdens compared to the previous structure, ensuring that individuals across different income levels benefit from the revisions. Reduction in the tax paid will allow the public to have more disposal income which can be invested, thereby contributing to nation building. The reduction in taxes go hand in hand with the Prime Minister's motive to include the middle class and common people in the nation building process through investments.

Marginal relief has also been introduced, ensuring that individuals who slightly exceed a tax slab do not suffer a disproportionately higher tax burden. However, taxpayers earning through special-rate sources—such as capital gains or lottery winnings—will not be eligible for the □12 lakh rebate benefit, ensuring that progressive taxation remains intact.

The below table can help in better understanding of the change in tax structure under the new regime –

Income	Tax on Slabs and rates		Benefit of	Rebate benefit	Total Benefit	Tax after rebate Benefit
	Present	Proposed	Rate /Slab	Full upto Rs 12 lacs		
8 lac	30,000	20,000	10,000	20,000	30,000	0
9 lac	40,000	30,000	10,000	30,000	40,000	0
10 lac	50,000	40,000	10,000	40,000	50,000	0
11 lac	65,000	50,000	15,000	50,000	65,000	0
12 lac	80,000	60,000	20,000	60,000	80,000	0
16 lac	1,70,000	1,20,000	50,000	0	50,000	1,20,000
20 lac	2,90,000	2,00,000	90,000	0	90,000	2,00,000
24 lac	4,10,000	3,00,000	1,10,000	0	1,10,000	3,00,000
50 lac	11,90,000	10,80,000	1,10,000	0	1,10,000	10,80,000

Source - Ministry of Finance

The new Tax slabs are as follows:

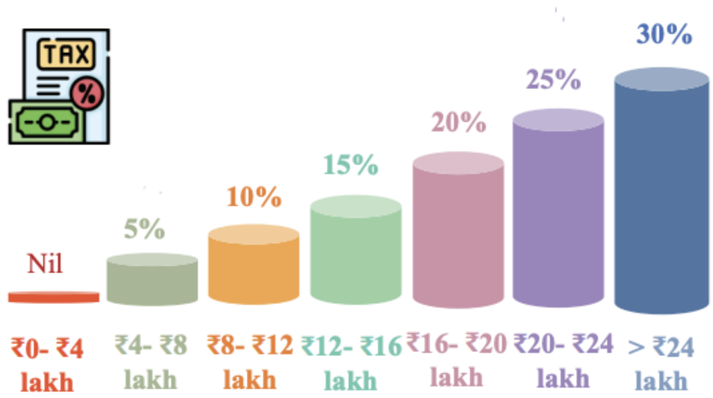

Source - Ministry of Finance

TDS and TCS Revisions: Key Changes from April 1, 2025

From April 1, 2025, significant modifications in Tax Deducted at Source (TDS) and Tax Collected at Source (TCS) rates will come into effect, impacting various transactions. The TDS threshold for commissions has been increased to ₹20,000, while the professional income threshold has been raised to ₹50,000, reducing the compliance burden for small-scale professionals. Rent payments will now attract TDS only if they exceed ₹50,000 per month, offering relief to numerous middle-class tenants. Additionally, the TDS exemption limit for interest and dividends has been increased to ₹10,000, making bank deposits and investments more tax-efficient for small investors.

Another significant move is the removal of TCS on the sale of goods, which will reduce the compliance burden on businesses. Additionally, the threshold for TCS on foreign remittances has been increased from ₹7 lakh to ₹10 lakh, easing the financial load on individuals sending money abroad for education or travel purposes. In a welcome relief to taxpayers, the provision that increased TDS rates for non-filers of income tax returns has been abolished, ensuring that taxpayers are not penalized solely for missing previous filings.

A summary of the changes in the TDS & TCS Regime are as follows:

- **Commission Income**: The exemption threshold has been increased from Rs 15,000 to Rs 20,000.
- **Professional Services**: The exemption limit has been raised from Rs 30,000 to Rs 50,000.
- **Rental Income**: The monthly exemption limit has been increased from Rs 40,000 to Rs 50,000.
- **Interest Income**: The TDS exemption has been raised from Rs 5,000 to Rs 10,000.
- **Dividend Income**: The exemption threshold is now Rs 10,000, up from Rs 5,000.
- **Section 194J (Professional and Technical Fees)**: The limit has been increased from Rs 30,000 to Rs 50,000.

The following changes in TCS provisions have been announced:

- **TCS on Sale of Goods Removed**: The requirement to collect tax at source on the sale of goods has been abolished, effective April 1, 2025. This is expected to ease cash flow constraints for businesses and streamline trade operations.
- **TCS on Foreign Remittances Relaxed**: The exemption threshold for foreign remittances under the Liberalized Remittance Scheme (LRS) has been increased from Rs 7 lakh to Rs 10 lakh. This benefits individuals sending money abroad for education, travel, or other expenses.

Impact on the General Public

These reforms are expected to positively impact the salaried class, small business owners, and professionals by reducing tax outgo and increasing disposable income. The higher TDS thresholds for interest and dividend income will particularly benefit senior citizens and small investors, ensuring that they retain a larger portion of their returns. The abolition of increased TDS rates for non-filers is also a welcome step, as it eliminates the excessive tax burden on those who may have missed filing their returns in the past due to genuine reasons.

Which personal tax regime should you choose?

Choosing between the old and new tax regimes for FY26 depends on your income level, financial situation, and ability to claim deductions. The old tax regime allows various exemptions and deductions such as **Section 80C (PPF, EPF, life insurance), Section 80D (medical insurance), House Rent Allowance (HRA), and home loan interest deductions**, which can significantly lower taxable income. However, it comes with higher tax rates. On the other hand, the new tax regime offers **lower tax rates but eliminates most deductions and exemptions**. The **Union Budget 2025 has made the new regime more attractive** by increasing the tax rebate limit to **₹12 lakh**, meaning individuals earning up to this amount pay zero tax. Additionally, the highest tax rate of 30% now applies to income above **₹24 lakh** instead of ₹15 lakh earlier, making it more beneficial for higher-income taxpayers. In my opinion, the new tax regime is better as it allows for more **disposable income and financial flexibility**, giving individuals the freedom to choose investments without being forced to do so for tax-saving purposes. However, if you can take advantage of significant deductions such as **Section 80C, 80D, HRA, and home loan interest (Section 24(b))**, the old regime might still be a better option. That said, this is subjective and depends entirely on an individual's tax planning and financial goals. It is always advisable to calculate tax liability under both regimes before making a decision.

Final Thoughts

The Union Budget 2025-26 has struck a balance between tax relief and compliance streamlining. By revising tax slabs, increasing exemption thresholds, and removing unnecessary levies, the government aims to ease the burden on taxpayers while ensuring better revenue collection. The introduction of marginal relief and the extended time frame for filing updated returns further demonstrates the government's commitment to creating a fair and efficient tax system. While businesses and high-income individuals may still need to navigate certain complexities, the overall effect of these changes is expected to be highly beneficial for the general public.

प्रेरणा गीत

अक्षर प्रभात ट्रस्ट, मानवता के लिए वरदान है।

जुड़ा हुआ रहेगा जो भी इससे जीवन का कल्याण है।

पथिकों को मिलती छाया, जन सेवा इसका ध्येय हैं

मिल जाये जो इससे, उसकों देता स्वागत भरी मुस्कान है।

बुजुर्ग (वृद्ध) है अनुभव का भंडार, उनका ज्ञान कराता प्रभात।

यह थाती रहे उपेक्षित, तो रहता समाज अपमानित है।

वृद्ध हमारे धरोहर है रखना ज्ञान सुरक्षित इनका।

ध्येय यही है, प्रयत्न यही है, रहे सुरक्षित ज्ञान इनका।

हर प्राणी पाये शिक्षा, जीवन सफल बनायें अपना।

लेकर ज्ञान वृद्धों का , करें उत्थान समाज का।

पर्यावरण सुधार भी करना, पृथ्वी के कष्ट को हरना।

जल, पवन, वृक्ष का रखना सुरक्षित हो ध्येय अपना।

विद्या– विनय विवेक रखते, जीवन को विपत्ति विहीन

धैर्य– मौन, संयम रखते, जीवन को परेशानियों से विहीन।

उद्‌देश्य यही है , ट्रस्ट का सद्‌कर्म युक्त हो जीवन।

प्रयासरत अक्षर प्रभात का, हों पुनीत अभियान अपना।

हमारा संकल्प

ब्रह्म का पुजारी हुँ मैं, अखिल ब्रह्मण्ड से हैं प्यार मुझे।
इसीलिए इस सृष्टि का कण–कण, सतत दे रहा सच्चा प्यार मुझे।।
व्रत हैं मेरा और यही, सच मानिये अनूठा अनुष्ठान हैं।
प्राणी जगत का हर प्राणी, मेरा तो प्रिय भगवान हैं।।
दोनों, उपादानों से मैं कर सकता, नियम का निर्वाह नहीं।
सभी आत्म निर्भर बनें सद्संकल्प हो, दूसरी, कोई चाह नहीं।।
सिसकता हैं हृदय मेरा, कभी–कभी रो पड़ता हैं।
शिला को पूज–पूज कर कैसी, पत्थर जैसी जड़ता हैं।।
हर प्राणी की सेवा करो प्राणी ही हैं परमात्मा।
क्या सच्चे प्रेम के लिए नहीं तरस रही हर आत्मा।।
जितने जलचर थलचर नभचर विराट प्रभू की छाया हैं।
आत्मा ही हैं शाश्वत सत्य, शेष नश्वर काया है।।
ज्ञानी पंडित हूँ नहीं, मेरी संवेदना ही संदेश हैं।
कोई असहाय दुःखी न हो, केवल इतना ही उद्देश्य हैं।।
मानव हो इतना विकसित, मानव माधव बन जाये।
फिर आए राम–राज्य जगसारा वृन्दावन बन जाए।।
घर–घर लुटता हो माखन, घर–घर में माखन चोर हो।
बंशी बजाता हर बालक, मन मोहक नन्दकिशोर हो।।

राम गोपाल बंसल

'अक्षर प्रभात ट्रस्ट' खाता नं. 2544101004105 ब्राच– केनरा बैंक, इन्द्रपुरी,भोपाल **IFSC Code CNRB 0002544** में भी जमा करवा सकते हैं।